International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 65-67

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 65-67
www.allresearchjournal.com
Received: 03-01-2016
Accepted: 06-02-2016

कृष्ण बहादुर सिंह
वरिष्ठ अध्यापक, शासकीय उच्च. माध्यमिक विद्यालय, अमरपुर, जिला उमरिया (म.प्र.)

डॉ. जय सिंह
प्राध्यापक, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

Correspondence
कृष्ण बहादुर सिंह
वरिष्ठ अध्यापक, शासकीय उच्च. माध्यमिक विद्यालय, अमरपुर, जिला उमरिया (म.प्र.)

अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन

कृष्ण बहादुर सिंह एवं डॉ. जय सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र अरविंद घोष के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन पर आधारित है। आधुनिक काल में भारत में अनेक महान क्रांतिकारी और योगी हुए हैं, अरबिंदो घोष उनमें अद्वितीय है। अरविंदो घोष कवि और भारतीय राष्ट्रवादी थे जिन्होंने आध्यात्मिक विकास के माध्यम से सार्वभौमिक मोक्ष का दर्शन प्रतिपादित किया।

प्रस्तावना
अरविंद घोष का जन्म बंगाल के कलकत्ता, वर्तमान कोलकाता, भारत में एक सम्पन्न परिवार में 15 अगस्त, 1872 को हुआ। उनके पिता का नाम डॉ. कृष्ण धन घोष और माता का नाम स्वर्णलता देवी था। इनके पिता पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुये थे। इसलिए उन्होंने अरविंदो को दो बड़े भाइयों के साथ दार्जिलिंग के एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिए भेज दिया। दो वर्ष बाद सात वर्ष की अवस्था में उनके पिता उन्हें इंग्लैण्ड ले गए। अरविंद को भारतीय एवं यूरोपीय दर्शन और संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। यही कारण है कि उन्होंने इन दोनों के समन्वय की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किया।
अरविंद घोष (1872 ई. - 1950 ई.) का जीवन के प्रति अत्यन्त व्यापक और विशाल दृष्टिकोण था। उनकी विचारधारा प्रांत और देश की एक सीमा तक ही अवरुद्ध नहीं थी, अपितु उसके विस्तृत क्षेत्र के अन्तर्गत विश्व के समस्त मानव समाहित थे। समस्त बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था लंदन एवं कैंब्रिज विश्वविद्यालयों में समाप्ति (1879 ई.-1893 ई.) तथा ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन एवं इटालियन आदि भाषाओं पर पूर्ण आधिपत्य के साथ-साथ इन भाषाओं के महान् लेखकों एवं कवियों की मौलिक रचनाओं के अध्ययन के बावजूद वे प्राचीन भारतीय संस्कृति के महान् पोषक थे।
अरविंदो घोष की शिक्षा दार्जिलिंग में ईसाई कॉन्वेंट स्कूल में प्रारंभ हुई और लड़कपन में ही उन्हें आगे की स्कूली शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। इंग्लैण्ड में एक अंग्रेज परिवार में रहने और पढ़न की व्यवस्था कर तीनों भाइयों को छोड़ वह वापस आ गये। इंग्लैण्ड में अरबिंदो घोष की भेट बड़ौदा नरेश से हुई। बड़ौदा नरेश अरबिंदो की योग्यता देखकर बहुत प्रभावित हुआ और उन्होंने अरबिंदो को अपना प्रायवेट सेक्रेटरी नियुक्त कर लिया। अतः वह भारत लौट आये। अरबिंदो ने कुछ समय तक तो वह कार्य किया, किन्तु फिर अपनी स्वतंत्र विचारधारा के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी। वह बड़ौदा कॉलेज में पहले प्रोफेसर बने और फिर बाद में वाइस प्रिंसिपल भी बने। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, जहाँ पर वे तीन आधुनिक योरपीय भाषाओं के कुशल ज्ञाता बन गए। 1892 में भारत लौटने पर उन्होंने बड़ौदा, वर्तमान बड़ोदरा और कोलकाता में विभिन्न प्रशासनिक व प्राध्यापकीय पदों पर कार्य किया। बाद में उन्होंने अपनी देशज संस्कृति की ओर ध्यान दिया और पुरातन संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं तथा योग का गहन अध्ययन प्रारंभ कर दिया। –

अध्ययन का उद्देश्य –
1. अरविन्द घोष के मूल ग्रन्थों के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन।
2. अरविन्द घोष के दार्शनिक विचारों की पृष्ठभूमि में उनके शिक्षादर्शन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
3. अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण एवं विवेचन करके शिक्षा के स्वरूप को प्रस्तुत करना।
4. अरविन्द घोष के प्रस्तावित शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार करना।
5. अरविन्द घोष के शिक्षा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा पद्धतियों की मीमांसा करना।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने अरविन्द घोष के शैक्षिक उद्देश्यों एवं शैक्षिक विचारों का वर्तमान

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय-वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अजीत, ज्ञान कुमारी (2002)[1], अय्यर, सी.पी. रामास्वामी (1992)[2], ओड, लक्ष्मी लाल (1994)[3], गुप्त, लक्ष्मी नारायण (1992)[4], गुप्ता, एस.पी. (1998)[5], जोशी, शान्ति (1975)[6], लाड, अशोक कुमार (1973)[7], वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद (1972)[8], Sri Aurobindo[9-16]

शोध कार्य का योगदान

आत्मशिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करना शिक्षा नहीं है। शिक्षा का काम मानव के मस्तिष्क एवं शक्तियों का सृजन करना है। सामान्य मस्तिष्क के अतिरिक्त एक विशिष्ट मस्तिष्क भी होता है जो जीवन एवं विषयों के परे स्थिति है और जो इस संसार में अपना प्रकाशन करता है। इस विशिष्ट मस्तिष्क की अनुभूति करना-कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। महर्षि अरविन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदर्श में संकीर्णता के लि कोई स्थान नहीं था। वे मानव प्रकृति के किसी भी पहलू को दबाने के पक्ष में नहीं थे और यह विश्वास करते थे कि सभी वृत्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास ही व्यक्ति में पूर्णता ला सकता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बुद्धि, भावना और इच्छा शक्ति का समान रूप से विकास करने में सहायक हो और साथ ही जो प्रकृति से सामंजस्य और अध्ययन के विभिन्न विषयों में सन्तुलन पैदा कर सके।

अध्ययन विधि एवं उपकरण

अनुसंधान का विषय ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। अतः शोधार्थी अपने अध्ययन में ऐतिहासिक अथवा लेख्य दस्तावेजी प्रमाण विधि, विश्लेषण एवं विवेचन विधि, वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया है। जहाँ तक अरविन्द घोष के जीवन परिचय, कृतित्व एवं शैक्षिक दर्शन को जानने का प्रयत्न है वहाँ पर ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है। मूल्यों की शिक्षा सम्बन्धी विचार का वर्तमान संदर्भ में व्याख्या करते समय वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

दृष्टिकोण

श्री अरविंद वर्तमान युग के सर्वोत्कृष्ट साधक एवं भारतीय ऋषि परम्परा की उज्जवल कड़ी है। उनका दर्शन उपनिषदों के दर्शन के समकक्ष है। वे उपनिषदों के भाष्यकार नहीं है। स्वयं उपनिषदिक सत्य के दृष्टा है। उनके महान ग्रन्थ 'लाइफ डिवाइन' में सत्य के साक्षात्कार का वर्णन है।

श्री अरविंद के अनुसार ब्रह्म संसार में है और संसार से परे भी है। जिसे दर्शन में ब्रह्म कहा जाता है उसे ही धर्म में ईश्वर कहना चाहिए। ईश्वर स्रष्टा, पालनकर्त्ता और संहारक है। ईश्वर सृष्टि का सार, पूर्ण, मुक्त, सनातन और सर्वात्मा है। वह परम पुरुष है और ब्रह्म निरपेक्ष सत्ता है, किन्तु अन्ततः दोनों एक है। ईश्वर प्रकट है, ब्रह्म अप्रकट है।

अरविंद ने विकास के सिद्धांत पर गंभीर विवेचन किया है। उनके अनुसार जब परम सत्ता पार्थिव सत्ता में उतरती हैं तो यह जगत् प्रकट होता है। यह अवरोहरण है। पार्थिव सत्ता जब परम की आरोहण करती है तो प्रकृति प्रकट होती है। अवरोहण में आरोहण का विपरीत क्रम होता है। आरोहण का क्रम इस प्रकार है - सत्, चित् शक्ति और आनन्द, अधिमानस, मानव प्राण और जड़त्व। अवरोहण का क्रम इस प्रकार है- जड़त्व, प्राण, मानस, अधिमानस, आनन्द, चित् शक्ति और सत्। विकास का क्रम विस्तार, ऊँचाई और पूर्णता की दिशाओं में चलता है। समस्त पृथ्वी का रूपान्तर विकास है। विकास का निर्देशन अन्त से होता है, आदि से नहीं। गन्तव्य का निर्धारण अन्तस्थ सच्चिदानन्द द्वारा होता है। विकास की अन्तिम अवस्था में अतिमानस का अवतरण होता है।

अरविंद के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास है। अपनी आंतरिक शक्तियों का विकास और वर्द्धन कर हम लोग पूर्ण मानव की संज्ञा प्राप्त कर सकते है। इसी उद्देश्य से अरविंद आध्यात्मिक शिक्षा को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं, यद्यपि साहित्यिक और वैज्ञानिक विषयों को भी उन्होंने बहुत प्रमुखता दी है। उनके विचारानुसार शिक्षा में सभी विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए, परंतु उसका मूल उद्देश्य मानव विकास हो।

अरविंद के मतानुसार जिस शिक्षा द्वारा बच्चों की सुप्त शक्तियों का विकास होता है तथा जीवन मानवता, राष्ट्र की आत्मा एवं मस्तिष्क से उचित संबंध जोड़ने में सहयोग प्राप्त होता है, वहां सच्ची एवं जीवित शिक्षा है। अरविंद का विश्वास है कि मनुष्य ने निश्चित बौद्धिक प्रवृत्तियों का विकास किया है, जैसे आत्मा, मस्तिष्क एवं विवेक बुद्धि, अतः पूर्ण जीवन एवं शिक्षा के लिए उसका विकास इस प्रकार मार्ग दर्शन होना चाहिए, जिससे प्रशिक्षित मस्तिष्क एवं विवेक बुद्धि के तत्वावधान में उसकी समुचित मोड़ मिल सके।

अरविंद के अनुसार वहीं सच्ची शिक्षा है, जो बच्चों की बौद्धिक एवं नैतिक शक्तियों के उच्चतम् विकास में सहायता प्रदान करती है। अतः शिक्षा की बच्चों के स्वभाव के मनोविज्ञान पर आधारित होना चाहिए। वे आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों से इस बात पर सर्वथा सहमत थे कि बच्चों पर कोईबात जबरदस्ती लादी नहीं जाए वरन् एक स्वतंत्र, उच्च आदर्शवातावरण में उनकी आंतरिक शंक्तियों को पुष्पित और वद्धिंत होने का अवसर दिया जाए। वे उनकी पूर्ण स्वतंत्रता के पक्षपाती थे। फ्रोवेल, स्वामी दयानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर के समान ही उन्होंने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है कि बालकों के अंदर स्वयं विकास करने की शक्ति है। वे स्वतः इसके लिए प्रतिभासंपन्न है। अतः सहानुभूति पूर्ण व्यवहार द्वारा उनका स्वतः विकसित होने का अवसर एवं वातावरण प्रदान किया जाए।

श्री अरविंद की ज्ञान मीमांसा में मानव अभिमानस और अतिमानस के सम्प्रत्ययों का विशेष महत्व है। जहाँ अन्य दार्शनिक केवल मानस को मानते है, वहाँ ये मानस को विकासशील मानते हुए उसके ऊपर अधिमानस और अतिमानस को भी मानते है। यद्यपि अधिमानस और अतिमानस तत्व है तथापि उनको हम उनके ज्ञान या सम्प्रत्यय से पृथक नहीं कर सकते। वह तत्व और ज्ञान- व्यक्ति दोनों है। वास्तव में मानस स्तर पर ज्ञाता और ज्ञेय को भेद है, वह इन स्तरों पर नही है। इस कारण अधिमानस और अतिमानस को मानस के सादृश्य से नहीं जाना जा सकता है। उनकों जानने के लिए मानस की सीमाओं का अतिक्रमण कर ज्ञान की उच्चतर भूमिका पर पहुंचना होगा।

उपसंहार

श्री अरविंद के अनुसार वर्तमान मानिसकतायुक्त व्यक्ति, विकास का चरम लक्ष्य नहीं है। विकास का लक्ष्य मानसिकता का अतिक्रमण करके मनुष्य को वहाँ ले जाना है, जो संस्कृति, जन्म-मृत्यु और काल से परे हो। अतिमानसिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए आंतरिक तीव्र अभीप्सा, दैहिक, प्राणिक और मानसिक अंगों का दिव्य के प्रति पूर्ण समर्पण और दिव्य द्वारा उनका रूपान्तरण नितांत आवश्यक है। यही श्री अरविंद के सर्वांगयोग की पूर्व भूमिका है। मानसिक से अतिमानसिक ज्ञान पर एकाएक नहीं पहुंचा जा सकता है। आध्यात्मिक विकास क्रमिक अभिव्यक्ति के तर्क पर आधारित है। अतः आत्मरूपान्तरण के सोपानों का पार करके ही अतिमानस अथवा दिव्यविज्ञान तक पहुंचा जा सकता है।

संदर्भ

1. अजीत, ज्ञान कुमारी - सेवा की त्रिवेणी, उ.प्र. पूर्वी रीजन, टी.ओ. एस. इलाहाबाद, 2002.
2. अय्यर, सी.पी. रामास्वामी - एनी बेसेण्ट, पब्लिकेशंस डिवीजन, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1992.
3. ओड, लक्ष्मी लाल के - शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1994.
4. गुप्त, लक्ष्मी नारायण - महान, पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992.
5. गुप्ता, एस.पी. - भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं

समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998.
6. जोशी, शान्ति – समसामयिक भारतीय, दार्शनिक लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975.
7. लाड, अशोक कुमार – भारतीय दर्शन में मोक्ष चिन्तन एक तुलनात्मक अध्ययन, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1973.
8. वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद – विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972.
9. Sri Aurobindo - The life divine, vol.I & II.
10. Sri Aurobindo - The Essays in Gita, Vol. I and II.
11. Sri Aurobindo - The Human cycle.
12. Sri Aurobindo - The Ideal of Human Unity.
13. Sri Aurobindo - The Supramental Manifestation.
14. Sri Aurobindo - The Foundations of Indin culture.
15. Sri Aurobindo Ashram Pondicherry - on Education
16. Sri Aurobindo Ashram Pondicherry - Physical education in Sri Aurobindo's Ashram.